नारी नामावली

यथा नाम, तथा गुण

नारी तेरी महिमा अपार, तू ही जग की है सृजनहार।

पाए तूने अनंत रूप काली, दुर्गा और लक्ष्मी स्वरूप।

लक्ष्मी का रूप जो पाती हैं, घर को धन से भर देती हैं।

जग में सबसे सुंदर नयनों वाली, नयना जी कहलाती हैं।

वृंदा जी अपने सद्‌गुणों के कारण, हर घर में पूजी जाती हैं।

माधवी जी शहद के समान मीठी और सुंदर दिखती हैं,

जहाँ–जहाँ से ये गुज़रे, बसंत ऋतु सी छा जाती हैं।

तान्या जी नाम है जिनका, परियों पर भी राज है उनका।

अनु जी और कनिका जैसा नाम मिला है जिनको,

कोई खण्डित और विभाजित न कर सकता उनको।

शिखा जी जैसा ओजस्वी नाम है जिनका,

पर्वत की चोटी पर प्रदीप्त नाम है उनका।

काजल नाम जो पाती हैं, सबके नयनों की शोभा बढ़ाती हैं।

विदुषा नाम मिला जिनको, ज्ञान का विस्तृत भंडार हैं वो।

जयंती न कभी किसी से हारी, सब पर पड़ती है वह भारी।

पायल जब पहनी जाती है, तब चाल मस्तानी हो जाती है।

राखी बँधते ही हर भाई की, कलाई की शोभा बढ़ जाती है।

वंदना, पूजा, अर्चना, आरती, संध्या इनके दर्शन होते ही,

सबके मन में आस्था, निष्ठा व श्रद्‌धा जग जाती है।

जिसने किया सिमरन को सिमर, उसका गया जीवन सुधर।

राधिका नाम है पुण्य नाम, ये देवों के द्वारा पूजी जाती हैं।

राजिका सौंदर्य की मूरत है, सबके दिल पर छा जाती है।

सरगम अपने मधुर स्वरों से, सबके दिल के तार छेड़ जाती है।

शीतल मंद पवन, भीषण गर्मी में भी सर्दी का एहसास दिलाती है।

एकता सदा हम सबको, एक मधुर बंधन में बाँधे रखती है।

मोनिका नाम जो पाती है, सबकी सलाहकार बन जाती है।

सारा नाम राजकुमारी का, जीवन भर राज वो करती है।

प्रतिमा नाम धारिणी, पूजा की सुंदर मूरत बन जाती हैं।

रुक्मणि नाम मिले जिसको, देव भाग्य मिल जाए उसको,

न जाने कितनी रानियों पर, पटरानी बन राज वो करती हैं।

अलका नगरी को पाने की, हर जीव की लालसा होती है,

पर आसान नहीं इसको पाना, सत्कर्मों से यह मिलती है।

आयशा नाम मिला जिनको, सुख, समृद्धि और वैभव ही रास आते उनको।

दीपा नाम जो पाती है, निरवरत प्रयासों से जग को प्रकाशित कर देती हैं।

आरुषि प्रातःकाल अपनी लालिमा से, दोनों लोकों को दीप्तिमान कर देती है।

प्रियंका नाम वाली, सुंदरता और सौम्यता की मूरत कहलाती है।

सुमन और कुसुम अपनी सुगंध से, सारे जग को महकाती हैं।

ऋतु की क्या तारीफ़ करें हम, हर मौसम में अपना रंग दिखाती है।

तरन्नुम के संग बिना, गीत और गज़ल सब सूनी रह रह जाती है।

संगीता तो सात सुरों की बंदिश हैं, रूझान कला में रखती हैं।

गंधर्वी वे कहलाती हैं, जो अपने स्वरों में माधुर्य झलकाती हैं।

शिप्रा वो है, जो पवित्रता व निरंतरता का प्रतीक बन जाती हैं।

सीमा नाम वाली अपनी सीमा में रहकर, औरों को सीमा में रखती हैं।

प्रीति अपने प्रेम और स्नेह के कारण, सबके दिलों में बस जाती है।

दीक्षा नाम जो पाती हैं, वह आत्मनिर्भर बन जाती हैं।

सुशीला जिनका नाम है, वह शिष्टता और विनम्रता की पहचान है।

मधुमति जिनका नाम है, शहद से मीठी उनकी मुस्कान है।

मीनू नाम वाली, सरसता से सबमें घुल–मिल जाने की पहचान है।

योगेश्वरी योग परी, देवी दुर्गा का एक नाम है,

जैसा उनका नाम है, वैसा ही उनका काम है।

सहोदरा नाम से ही कितना अपनत्व झलकता है,

यह नाम अपना ही कोई भई बंधु सा लगता है।

सबसे नेह लगाने वाले ही नेहा कहलाते हैं,

नेह जहाँ उनको मिल जाए, अपना सर्वस्व लुटाते हैं।

जो सबको हो प्रिय, वही प्रिया कहलाती है,

अपनी मधुर मुस्कान से, सबके दिल पर छा जाती है।

मृदुला जिसका नाम है, कोमलता की वह पहचान है,

अपने मीठे–मीठे वचनों से सबका दिल बहलाती है।

मृदुल प्रिया जब एक साथ हो, मृदुल प्रिया जब एक साथ हो,

तब कविता की रचना हो जाती है, तब कविता की रचना हो जाती है।

मृदुल प्रिया